महाकस्सप

भगवान बुद्ध के महाश्रावक

(धुतांगधारियों में अग्र)

विपश्यना विशोधन विन्यास

भगवान बुद्ध के महाश्रावक

महाकस्सप

(धुतांगधारियों में 'अग्र')

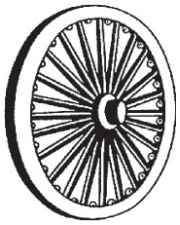

विपश्यना विशोधन विन्यास

धम्मगिरि, इगतपुरी

भगवान बुद्ध की उद्घोषणा

"एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनं धुतवादानं यदिदं महाकस्सपो।"

"भिक्षुओ! मेरे धुतांगधारी श्रावकों में अग्र (श्रेष्ठतम) है 'महाकस्सप'।"

–अङ्गुत्तरनिकाय १.१.१९१

भगवान बुद्ध के महाश्रावक

महाकस्सप

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय [vii]

महाकस्सप का भव-संसरण.....१

भगवान पदुमुत्तर का शासनकाल १
भगवान विपस्सी का शासनकाल २
अंतरालः भगवान कोणागमन तथा कस्सप के शासनकाल ४
भगवान कस्सप का शासनकाल ५
भगवान गौतम बुद्ध का शासनकाल ८

महाकस्सप भिक्षुओं से –.....१२

भगवान गौतम बुद्धः महाकस्सप के बारे में – १५

चांद की तरह कुलों में जाना १५
कुलों में जाने योग्य भिक्षु १६
महाकस्सप की दूरदृष्टि. १७
महाकस्सप की संतुष्टि १८
सद्धर्म का लोप १९
महाकस्सप का बीमार पड़ना २०
धर्मोपदेश सुनने के लिए अयोग्य भिक्षु २१
अनासक्त महाकस्सप २१
एक ब्रह्मा की मिथ्या-दृष्टि का उन्मूलन २३
'ब्राह्मण' का 'साधना' से मेल. २४

ध्यान-अभिज्ञा में बुद्ध से समानता २५

विविध प्रकरण २७

महाकस्सप एवं सारिपुत्त के संवाद २७
अव्याकृत २७

अयोग्य सेवक २८
शिष्य सोममित्त ३१
सक्क द्वारा भिक्षादान ३२
विभ्रांत भिक्षु ३२
भिक्षुणी थुल्लतिस्सा का संघ से बहिष्कार ३३
भिक्षुणी थुल्लनन्दा का संघ से बहिष्कार. ३४

महाकस्सप द्वारा प्रथम संगीति का आयोजन ३६

भगवान बुद्ध का महापरिनिर्वाण ३६
आयुष्मान आनन्द को प्रथम-संगीति में शामिल करना ३८
प्रथम संगीति की कार्यवाही ३९
विनयधर उपालि से विनय पूछना ४०
बहुश्रुत, स्मृतिमान आनन्द से धर्म (सूत्र) पूछना . . ४१

अन्य धम्म-संगीतियों का आयोजन.....४३

महास्थविर महाकस्सप के कतिपय बोल. ४५

परिशिष्ट १.....५०

धुतंग ५०
भिक्षु जीवन की सार्थकता ५०
धुतांग पालन करने वालों के गुण. ५२

परिशिष्ट २.....५३

तुरित-चारिका ५३

विपश्यना साहित्य ५४
विपश्यना साधना के केंद्र ५७

प्रकाशकीय

थेरगाथा की अट्ठकथा में भगवान बुद्ध के अस्सी 'महाश्रावकों' के नाम गिनाये गये हैं जो वर्णानुक्रम से निम्न प्रकार से हैं –

अङ्गुलिमाल, अजित, अञ्ञासिकोण्डञ्ञ, अनुरुद्ध, अस्सजि, आनन्द, उदय, उपवान, उपसिव, उपसेन, उपालि, उरुवेलकस्सप, कङ्खारेवत, कप्प, काळुदायी, किमिल, कुण्डधान, कुमारकस्सप, खदिरवनियरेवत, गयाकस्सप, गवम्पति, चूळपन्थक, जतुकण्णि, तिस्समेत्तेय्य, तोदेय्य, दब्ब, दारुचीरिय, धोतक, नदीकस्सप, नन्द (१), नन्द (२), नन्दक, नागित, नालक, पिङ्गिय, पिण्डोलभारद्वाज, पिलिन्दवच्छ, पुण्णक, पुण्णजि, पुण्ण मन्ताणिपुत्त, पुण्ण सुनापरन्तक, पोसाल, बाकुल, भगु, भद्दिय (१), भद्दिय (२), भद्रावुध, महाउदायी, महाकच्चायन, महाकप्पिन, महाकस्सप, महाकोट्ठिक, महाचुन्द, महानाम, महापन्थक, महामोग्गल्लान, मेघिय, मेत्तगू, मोघराजा, यस, यसोज, रट्ठपाल, राध, राहुल, लकुण्डकभद्दिय, वक्कलि, वङ्गीस, वप्प, विमल, सभिय, सागत, सारिपुत्त, सीवलि, सुबाहु, सुभूति, सेल, सोण कुटिकण्ण, सोण कोळिवीस, सोभित, हेमक।

इनमें महाश्रावक 'महाकस्सप' का नाम भी है। इस पुस्तिका में इन महाश्रावक का संक्षिप्त जीवनवृत्तांत प्रस्तुत किया जा रहा है।

महाश्रावक महाकस्सप की विशेषताएं निम्न प्रकार से हैं –

- भगवान गौतम बुद्ध ने इन्हें अपने धुतांग व्रतधारी भिक्षुओं में 'अग्र' घोषित किया था।
- भगवान तथा महाकस्सप ने आपस में चीवरों का आदान-प्रदान किया था जो एक असाधारण घटना थी।

- ध्यान-अभिज्ञा में ये भगवान के जोड़ के थे। भगवान स्वयं कहते थे कि जिन-जिन ध्यान अवस्थाओं को प्राप्त कर मैं विहार करता हूं, मेरा यह श्रावक भी उसी प्रकार विहार कर पाने की क्षमता रखता है।

- देवगण, यहां तक कि उनका राजा सक्क भी, इन महाश्रावक को दान देकर अपने आप को बड़ा भाग्यशाली माना करते थे।

- ये एक आदर्श भिक्षु का जीवन जीते थे। ये एकांतवासी थे, पर्वतारोहण कर जीवन यापन करना इन्हें बहुत प्रिय लगता था। इनकी धारणा थी कि पंच-स्कंधों के उदय-व्यय को जानने से जो प्रीति-प्रमोद जागता है, उसका कोई विकल्प नहीं होता।

- भगवान बुद्ध की अनमोल शिक्षा का हम तक पहुँच पाना इन्हीं की दूरदर्शिता का परिणाम है। भगवान के महापरिनिर्वाण के तुरंत बाद जब सुभद्द नाम के भिक्षु ने भगवान की शिक्षा को नकारते हुए मनचाही करने की आवाज बुलंद की, तब इन्हीं महाश्रावक ने भगवान की समूची शिक्षा का पांच सौ अर्हतों की सभा में संगायन करवा कर धर्म को अपने अक्षुण्ण रूप में प्रतिष्ठापित किया। और यही शिक्षा अपने अविकल रूप में पीढ़ी-दर-पीढ़ी हम तक पहुँच पायी है जिससे हम सभी लाभान्वित हो रहे हैं।

- इन महाश्रावक के बारे में भगवान की धारणा का नीचे अंकित पंक्तियों से पता चलता है –

  "भिक्षुओ! कस्सप अल्पेच्छ है। एकांतवासी है। तीन चीवर मात्र से संतुष्ट रहता है। भिक्षाटन पर ही निर्भर रहता है। वह सदा ऐसा ही बना रहना चाहता है ताकि वर्तमान के व भविष्य के श्रावक जानें कि बुद्ध के शिष्य को कैसा होना चाहिए। बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय – वह ऐसा आचरण करता है। तुम्हें भी ऐसा ही करना चाहिए।"

इसी प्रकार से अन्य महाश्रावकों के इतिवृत्त भी प्रकाशित करने की योजना है जिससे विपश्यी साधक एवं साधिकाएं उनसे प्रेरणा पाकर अपनी जीवन-शैली का पुनरवलोकन कर इसका यत्किंचित परिष्कार कर सकें।

विपश्यना विशोधन विन्यास